

वृद्धावस्था में जीवनसाथी की अनुपस्थिति का पारिवारिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक संतुष्टि पर प्रभाव: एक सामाजिक अध्ययन

¹सुषमा यादव and ²डॉ मौसमी सिंह (प्राध्यापक)

¹ शोधकर्ता, होम साइंस डिपार्टमेंट

² प्राध्यापक, होम साइंस डिपार्टमेंट

विजयाराजे शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
जीवाजी विश्वविद्यालय

सारांश : वृद्धावस्था जीवन का एक संवेदनशील चरण होता है, जिसमें व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तनों से गुजरता है। इस जीवन-चरण में यदि जीवनसाथी का अभाव हो, तो वृद्धजन को कई स्तरों पर गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि जीवनसाथी की अनुपस्थिति वृद्धजनों के पारिवारिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक संतुष्टि पर किस प्रकार प्रभाव डालती है। अध्ययन में 200 ऐसे वृद्ध प्रतिभागियों को शामिल किया गया जिनके जीवनसाथी नहीं हैं। डेटा एक विशेष रूप से डिज़ाइन की गई प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया गया, जो चार समस्यात्मक एवं चार जीवन संतुष्टि उपवर्गों पर आधारित थी। डेटा का विश्लेषण वर्णनात्मक और तुलनात्मक आँकड़ों के माध्यम से किया गया तथा क्रोनबाख अल्फा से विश्वसनीयता की पुष्टि की गई। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि जीवनसाथी की अनुपस्थिति से वृद्धजन अधिक पारिवारिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अनुभव करते हैं, और उनकी जीवन संतुष्टि का स्तर अपेक्षाकृत कम होता है। विशेष रूप से महिलाएँ, अकेले रहने वाले वृद्धजन, एवं कम आय वर्ग के व्यक्ति अधिक असंतोष और समस्याओं का अनुभव करते हैं। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और परिवारों को वृद्धजन के प्रति अधिक संवेदनशीलता विकसित करने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।



मुख्य शब्द : वृद्धावस्था, जीवनसाथी की अनुपस्थिति, जीवन संतुष्टि, पारिवारिक समस्याएँ, मनोवैज्ञानिक प्रभाव, सामाजिक अध्ययन, वरिष्ठ नागरिक।

